भारतीय रेल • INDIAN RAILWAYS

पश्चिम रेलवे
Western Railway

ई-राजहंस

प्रधान कार्यालय- पश्चिम रेलवे

ई _ राजहंस

पश्चिम रेलवे - प्रधान कार्यालय ,

चर्चगेट, मुंबई

जुलाई से सितम्बर-**2018**

अंक - 35

ई-राजहंस

संरक्षक
अनिल कुमार गुप्ता
महाप्रबंधक **पश्चिम** रेलवे

परामर्शदाता
पी.एन.राय
मुख्य राजभाषा अधिकारी

संपादक
डॉ. सुशील कुमार शर्मा
उप महाप्रबंधक (राजभाषा)

संपादक मंडल
श्री अशोक कुमार लोंढे, वराधि
श्री हरीश चन्द्र, वरि. अनु.
सरोज कुमार, क. अनु.
हरेन्द्र कु. यादव, क. अनु.
आशीष चौधरी, क. अनु.

छायांकन एवं अभिकल्पना
राकेश कुमार सुमन, गोप.सहा.

अनुक्रमणिका

1. महाप्रबंधक महोदय का संदेश 1
2. मुख्य राजभाषा अधिकारी महोदय का संदेश 2
3. संपादक की कलम से 3
4. कवि परिचय-देवकीनंदन खत्री 4-5
5. पश्चिम रेलवे, प्रधान कार्यालय की गतिविधियाँ 6-9
6. पश्चिम रेलवे समाचार 10-13
7. मुंबई सेंट्रल मंडल की राजभाषा संबंधी गतिविधियाँ 14-15
8. ई.एम. यू. कारखाना महालक्ष्मी की राजभाषा संबंधी गतिविधियाँ 16
9. लोअर परेल कारखाना की राजभाषा संबंधी गतिविधियाँ 16
10. वड़ोदरा मंडल की राजभाषा संबंधी गतिविधियाँ 17
11. प्रतापनगर कारखाना की राजभाषा संबंधी गतिविधियाँ 18
12. अहमदाबाद मंडल की राजभाषा संबंधी गतिविधियाँ 19
13. साबरमती कारखाना की राजभाषा संबंधी गतिविधियाँ 20-22
14. राजकोट मंडल की राजभाषा संबंधी गतिविधियाँ 23
15. भावनगर मंडल की राजभाषा संबंधी गतिविधियाँ 24-25
16. भावनगर कारखाना की राजभाषा संबंधी गतिविधियाँ 26
17. रतलाम मंडल की राजभाषा संबंधी गतिविधियाँ 27
18. दाहोद कारखाना की राजभाषा संबंधी गतिविधियाँ 28

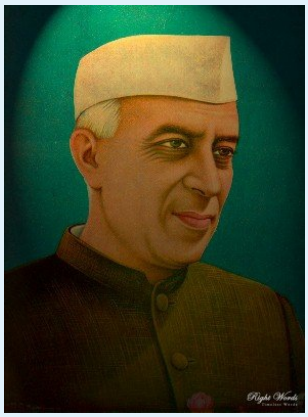

हिन्दी एक जानदार भाषा है, वह जितनी बढ़ेगी, देश को उतना ही लाभ होगा।

-जवाहर लाल नेहरू

महाप्रबंधक महोदय का संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि ' ई-राजहंस ' राजभाषा पत्रिका का 35 वां अंक पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है। आज हिंदी ज्ञान-विज्ञान, विज्ञापन, कंप्यूटर, इंटरनेट एवं सभी संप्रेषण माध्यमों की लोकप्रिय भाषा बन चुकी है क्योंकि हिंदी को आम जनता अच्छी तरह समझती है और इसका प्रयोग करती है। इसमें संदेह नहीं है कि हिंदी का साहित्य काफी समृद्ध है और इसकी लिपि भी वैज्ञानिक है। हिंदी भारतीय एकता और अखंडता को भी बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। सरकारी कामकाज में राजभाषा का प्रयोग बढ़ाने के लिए पश्चिम रेलवे के प्रत्येक अधिकारी एवं कर्मचारी को पूरी निष्ठा एवं ईमानदारी से हिंदी में कार्य करना चाहिए। भारतीय संविधान के अनुसार राजभाषा में कार्य करना भारत के प्रत्येक नागरिक का नैतिक एवं संवैधानिक दायित्व है।

भारतीय रेलवे ने पूरे भारत में राजभाषा के प्रचार-प्रसार एवं प्रयोग को बढ़ाने के लिए विशेष योगदान दिया है परन्तु अभी भी इस मामले में और अधिक प्रभावी प्रयास अपेक्षित हैं। प्रत्येक अधिकारी एवं कर्मचारी हिंदी के सरल, सहज एवं प्रचलित शब्दों का प्रयोग करके राजभाषा के प्रचार-प्रसार एवं विकास में विशेष योगदान दे सकता है।

प्रधान कार्यालय के राजभाषा विभाग द्वारा तैयार ई-पत्रिका में प्रेरणादायक एवं रोचक रचनाएं, समसामयिक विषयों, राजभाषा नीति एवं पश्चिम रेलवे पर गत तिमाही में आयोजित विभिन्न गतिविधियों को शामिल किया जाता है। इस ई-पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मैं संपादक मंडल को बधाई देता हूँ और शुभकामनाएं देता हूँ। मैं आशा करता हूँ कि प्रधान कार्यालय का राजभाषा विभाग यह ई-पत्रिका निरंतर तैयार करता रहेगा और यह तिमाही पत्रिका पश्चिम रेलवे के अधिकारियों/कर्मचारियों के ज्ञानवर्धन के साथ-साथ राजभाषा के प्रचार-प्रसार में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रहेगी।

शुभ कामनाओं सहित.....

अनिल कुमार गुप्ता
महाप्रबंधक,पश्चिम रेलवे

मुराधि महोदय का संदेश

भारतीय रेल, राजभाषा हिंदी के निरन्तर प्रचार-प्रसार एवं प्रयोग को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रही है। पश्चिम रेलवे भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुरूप हिंदी को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए सदैव अग्रणी रही है। पश्चिम रेलवे अपने सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सतर्कता, सक्रियता, एकजुटता और सहयोग से राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में लगातार आगे बढ़ रही है। इसके लिए मैं पश्चिम रेलवे के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को बधाई देता हूं और उम्मीद करता हूं कि आप सभी अपने दैनिक सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करके भारतीय संविधान के प्रति अपनी निष्ठा भावना का परिचय देते रहेंगे।

हिंदी आम जनता की बोलचाल की भाषा है अतः इसका अधिकाधिक प्रयोग देश की एकता और उन्नति के लिए आवश्यक है। आजकल आम जनता विभिन्न प्रकार की जानकारियां वेबसाइटों से प्राप्त कर रही है। इसलिए यह आवश्यक है कि हम सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से हिंदी का प्रचार-प्रसार एवं प्रयोग करें ताकि सरकार की सभी कल्याणकारी योजनाओं का लाभ देश के प्रत्येक नागरिक को मिल सके।

पश्चिम रेलवे में राजभाषा का प्रचार-प्रसार एवं प्रयोग बढ़ाने के लिए प्रधान कार्यालय, समस्त मंडलों तथा कारखानों द्वारा हिंदी कार्यशालाओं, हिंदी प्रशिक्षणों, हिंदी पुस्तकालयों का संचालन, हिंदी प्रतियोगिताओं एवं अन्य हिंदी प्रोत्साहन कार्यक्रमों/गतिविधियों का नियमित आयोजन किया जा रहा है। भारत सरकार की राजभाषा नीति का आधार प्रेरणा, प्रोत्साहन और सदभावना है इसलिए पश्चिम रेलवे पर राजभाषा के प्रयोग को बढ़ाने के उद्देश्य से गृह मंत्रालय और रेलवे बोर्ड की सभी हिंदी प्रोत्साहन योजनाएं शुरू की गई हैं।

पश्चिम रेलवे में राजभाषा कार्यान्वयन में हो रही प्रगति की समीक्षा के लिए क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की, मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समितियों एवं उनके अधीन स्टेशन राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की तथा कारखानों की विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की रेलवे बोर्ड द्वारा जारी मानकों के अनुसार समय-समय पर नियमित तिमाही बैठकें आयोजित की जाती हैं। इसके अतिरिक्त, सभी मदों में हिंदी के प्रयोग को सुनिश्चित करने हेतु प्रधान कार्यालय, समस्त मंडल कार्यालयों और कारखाना कार्यालयों के अधिकारियों द्वारा अपने-अपने विभागों के अलावा राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी निरीक्षण भी किए जाते हैं और निरीक्षण रिपोर्टों में राजभाषा प्रगति का उल्लेख किया जाता है।

आइए, हम सब मिलकर राजभाषा के प्रगामी प्रयोग को बढ़ाने का संकल्प करें ताकि यह रेल के साथ-साथ देश के विकास में और अधिक सहायक हो।

पी.एन.राय
मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं
प्रमुख मुख्य बिजली इंजीनियर

संपादक की कलम से

पश्चिम रेलवे की 'ई-राजहंस' पत्रिका का 35वां अंक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे हर्ष की अनुभूति हो रही है। राजभाषा पत्रिकाएं जहाँ एक तरफ रचनाकारों को अपने विचार व्यक्त करने के लिए एक मंच प्रदान करती हैं, वहीं दूसरी तरफ इन पत्रिकाओं के माध्यम से पाठकों को सम्बद्ध कार्यालयों की विभिन्न गतिविधियों की जानकारी प्राप्त होती है। वास्तव में इन पत्रिकाओं के प्रकाशन से कार्यालयों में राजभाषा में कार्य करने का एक अनुकूल वातावरण बनता है।

भाषा मानव जीवन तथा समाज का अभिन्न अंग है क्योंकि इसके द्वारा केवल विचारों, सूचनाओं तथा भावों का ही सम्प्रेषण नहीं होता है बल्कि यह तथ्यों के मूल्यांकन, गहन चिंतन एवं समस्त व्यवहार का भी आधार है। अतः सामाजिक कल्याण और विकास के कार्यक्रमों की सफलता भी भाषा पर निर्भर करती है। यह भी सत्य है कि जब हम मातृभाषा में अपने विचारों को व्यक्त करते हैं तब सृजनता में मौलिकता की संभावना अधिक रहती है।

हिंदी भाषा का शब्द भंडार और साहित्य पर्याप्त समृद्ध है और इसकी लिपि भी वैज्ञानिक है। भारतीय रेल की भांति हिंदी भी सम्पूर्ण भारत को एकता के सूत्र में बांधने में पूर्णतया सक्षम है। इसलिए हिंदी के महत्व को ध्यान में रखते हुए ही भारतीय संविधान द्वारा 14 सितम्बर, 1949 को हिंदी को राजभाषा के रुप में स्वीकार किया गया था। अतः भारत के प्रत्येक नागरिक का यह परम कर्तव्य है कि वह अपने समस्त कार्यों में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करे।

इस अंक को पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक, सूचनापरक एवं रोचक बनाने का प्रयास किया गया है। इस अंक में पश्चिम रेलवे के प्रधान कार्यालय, सभी मंडलों एवं कारखानों द्वारा जुलाई से सितम्बर 2018 के दौरान आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों/गतिविधियों को संकलित किया गया है।

अंत में मैं आशा करता हूँ कि 'ई-राजहंस' पत्रिका पश्चिम रेलवे के समस्त कार्यालयों की राजभाषा-कार्यान्वयन संबंधी विभिन्न उपलब्धियों को प्रतिबिंबित करने के साथ-साथ कर्मचारियों के कलात्मक पक्ष को भी निरन्तर उजागर करती रहेगी।

डॉ. सुशील कुमार शर्मा
उप महाप्रबंधक (राजभाषा)

कवि परिचय- भारतेंदु हरिशचंद्र

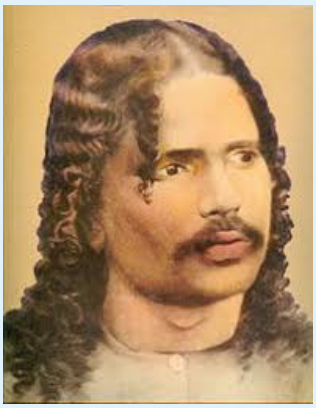

भारतेंदु हरिशचंद्र आधुनिक हिंदी साहित्य और साथ ही हिंदी साहित्य के जनक के नाम से जाने जाते है। आधुनिक भारत के सबसे प्रभावशाली हिंदी लेखको में से वे एक है। वे एक सम्मानित कवि भी है। वे बहुत से नाटको के लेखक भी रह चुके थे। अपने कार्यो में उन्होंने सामाजिक राय के लिए रिपोर्ट, पब्लिकेशन, ट्रांसलेशन और मीडिया जैसे सभी उपकरणों का उपयोग किया था।

वे अपने उपनाम "रसा", से कोई भी लेख लिखते थे, हरिशचंद्र ने अपने लेखों में लोगों की व्यथा, देश की कविता, निर्भरता, अमानवीय शोषण, मध्यम वर्गीय लोगों की अशांति और देश के विकास में बाधा को दर्शाया था। वे एक प्रभावशाली हिन्दू "परंपरावादी" थे जिन्होंने वैष्णव भक्ति के उपयोग से हिन्दू धर्म की व्याख्या की थी।

जीवनी – बनारस में जन्मे भारतेंदु हरिशचंद्र के पिता गोपाल चंद्र थे, जो एक कवि थे। वे अपने उपनाम गिरधर दास के नाम से लिखते थे। भारतेंदु के माता-पिता की मृत्यु जब वे युवावस्था में थे तभी हो गयी थी लेकिन उनके माता-पिता के भारतेंदु पर काफी प्रभाव पड़ चुका था। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने बताया कि कैसे भारतेंदु ओड़िसा में पूरी के जगन्नाथ मंदिर अपने परिवार के साथ 1865 में गये थे, जब वे आयु के सिर्फ 15 वे साल में थे। इस यात्रा के समय बंगाल पुनर्जागरण काल का उन पर काफी प्रभाव पड़ा और तभी उन्होंने सामाजिक, ऐतिहासिक और पौराणिक नाटकों और हिंदी उपन्यासों की रचना करने का निर्णय लिया था। इसी प्रभाव के चलते उन्होंने 1868 में बंगाली नाटक विद्यासुंदर का रूपांतर हिंदी भाषा में किया था। भारतेंदु ने अपना पूरा जीवन हिंदी साहित्य के विकास में व्यतीत किया। लेखक, देशभक्त और आधुनिक कवि के रूप में उन्हें पहचान दिलाने के उद्देश्य से 1880 में काशी के विद्वानों ने सामाजिक मीटिंग में उन्हें "भारतेंदु" की उपाधि दी थी। प्रसिद्ध साहित्यिक आलोचक राम विलास शर्मा ने भी उन्हें हिंदी साहित्य का सबसे प्रभावशाली और आधुनिक हिंदी साहित्य का जनक और नायक बताया।

भारतेन्द्र हरिश्चन्द्र (जन्म: 9 सितम्बर सन् 1850, काशी; मृत्यु: 6 जनवरी, सन् 1885) आधुनिक हिंदी साहित्य के पितामह कहे जाते हैं। भारतेन्दु हिन्दी में आधुनिकता के पहले रचनाकार थे। जिस समय भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का आविर्भाव हुआ, देश गुलामी की जंजीरों में जकड़ा हुआ था। अंग्रेज़ी शासन में अंग्रेज़ी चरमोत्कर्ष पर थी। शासन तंत्र से सम्बन्धित सम्पूर्ण कार्य अंग्रेज़ी में ही होता था। अंग्रेज़ी हुकूमत में पद लोलुपता की भावना प्रबल थी। भारतीय लोगों में विदेशी सभ्यता के प्रति आकर्षण था। ब्रिटिश आधिपत्य में लोग अंग्रेज़ी पढ़ना और समझना गौरव की बात समझते थे। हिन्दी के प्रति लोगों में आकर्षण कम था, क्योंकि अंग्रेज़ी की नीति से हमारे साहित्य पर बुरा असर पड़ रहा था। हम गुलामी का जीवन जीने के लिए मजबूर किये गये थे। हमारी संस्कृति के साथ खिलवाड़ किया जा रहा था। ऐसे वातावरण में जब बाबू हरिश्चन्द्र अवतारित हुए तो उन्होंने सर्वप्रथम समाज और देश की दशा पर विचार किया और फिर अपनी लेखनी के माध्यम से विदेशी हुकूमत का पर्दाफ़ाश किया।

जीवन परिचय

युग प्रवर्तक बाबू भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का जन्म काशी नगरी के प्रसिद्ध 'सेठ अमीचंद' के वंश में 9 सितम्बर सन् 1850 को हुआ। इनके पिता 'बाबू गोपाल चन्द्र' भी एक कवि थे। इनके घराने में वैभव एवं प्रतिष्ठा थी। जब इनकी अवस्था मात्र 5 वर्ष की थी, इनकी माता चल बसीं और दस वर्ष की आयु में पिता जी भी चल बसे। भारतेन्दु जी विलक्षण प्रतिभा के व्यक्ति थे। इन्होंने अपने परिस्थितियों से गम्भीर प्रेरणा ली। इनके मित्र मण्डली में बड़े-बड़े लेखक, कवि एवं विचारक थे, जिनकी बातों से ये प्रभावित थे। इनके पास विपुल धनराशि थी, जिसे इन्होंने साहित्यकारों की सहायता हेतु मुक्त हस्त से दान किया। इनकी साहित्यिक मण्डली के प्रमुख कवि थे– पं. बालकृष्ण भट्ट, पं. प्रताप नारायण मिश्र, पं. बदरीनारायण उपाध्याय 'प्रेमधन' आदि बाबू हरिश्चन्द्र बाल्यकाल से ही परम उदार थे। यही कारण था कि इनकी उदारता लोगों को आकर्षित करती थी। इन्होंने विशाल वैभव एवं धनराशि को विविध संस्थाओं को दिया है। इनकी विद्वता से प्रभावित होकर ही विद्वतजनों ने इन्हें 'भारतेन्दु' की उपाधि प्रदान की। अपने उच्चकोटि के लेखन कार्य के माध्यम से ये दूर-दूर तक जाने जाते थे। इनकी कृतियों का अध्ययन करने पर आभास होता है कि इनमें कवि, लेखक और नाटककार बनने की जो प्रतिभा थी, वह अदभुत थी। ये बहुमुखी प्रतिभा से सम्पन्न साहित्यकार थे।

कृतियाँ-यद्यपि भारतेन्दु जी विविध भाषाओं में रचनायें करते थे, किन्तु ब्रजभाषा पर इनका असाधारण अधिकार था। इस भाषा में इन्होंने अदभुत श्रृंगारिकता का परिचय दिया है। इनका साहित्य प्रेममय था, क्योंकि प्रेम को लेकर ही इन्होंने अपने 'सप्त संग्रह' प्रकाशित किए हैं। प्रेम माधुरी इनकी सर्वोत्कृष्ट रचना है। जिसकी कुछ पंक्तियाँ निम्नवत हैं–

मारग प्रेम को समुझै 'हरिश्चन्द्र' यथारथ होत यथा है लाभ कछु न पुकारन में बदनाम ही होन की सारी कथा है। जानत ही जिय मेरौ भली विधि और उपाइ सबै बिरथा है। बावरे हैं ब्रज के सिगरे मोंहि नाहक पूछत कौन बिथा है।

भारतेन्दु जी अत्यन्त कम अवस्था से ही रचनाएँ करने लगे थे। इन्होंने नाटक के क्षेत्र में भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण योगदान प्रदान किया है। भारतेंदु हरिशचंद्र ने कलाकार के रूप में थिएटर में प्रवेश किया था और जल्द ही वे डायरेक्टर, मैनेजर और नाटककार भी बन गये। उन्होंने थिएटर का उपयोग जनता की राय लेने के लिए किया था। उनके मुख्य नाटक इस प्रकार है –

वैदिकी हिमसा हिल्सा ना भवती, भारत दुर्दशा, पौराणिक सत्य हरिशचंद्र (सच्चा हरिशचंद्र), नील देवी, अंधेर नगरी, आधुनिक हिंदी नाटको में यह सबसे प्रसिद्ध नाटक है। जिसका रूपांतर भारत में बहुत से भाषाओ में भी किया गया है।

प्रगतिशील लेखक-भारतेन्द्र जी ने भक्ति प्रधान एवं श्रृंगारयुक्त रचनाएँ की हैं। उनमें अपने देश के प्रति बहुत बड़ी निष्ठा थी, उन्होंने सामाजिक समस्याओं के उन्मूलन की बात की है, उनकी भक्ति प्रधान रचनाएँ घनानंद एवं रसखान की रचनाओं की कोटि की हैं। उन्होंने संयोग की अपेक्षा वियोग पर विशेष बल दिया है। वे स्वतंत्रता प्रेमी एवं प्रगतिशील विचारक व लेखक थे। उन्होंने माँ सरस्वती की साधना में अपना धन पानी की तरह बहाया और साहित्य को समृद्ध किया। उन्होंने अनेक पत्र-पत्रिकाओं का सम्पादन किया। जीवन का अन्तिम दौर आर्थिक तंगी से गुजरा, क्योंकि धन का उन्होंने बहुत बड़ा भाग साहित्य समाज सेवा के लिए लगाया। ये भाषा की शुद्धता के पक्ष में थे। इनकी भाषा बड़ी परिष्कृत एवं प्रवाह से भरी है। भारतेन्दु जी की रचनाओं में उनकी रचनात्मक प्रतिभा को भली प्रकार देखा जा सकता है।

सभी विधाओं में लेखन-भारतेन्दु जी ने अपनी प्रतिभा के बल पर हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान प्रदान किया है। हिन्दी गद्य साहित्य को इन्होंने विशेष समृद्धि प्रदान की है। इन्होंने दोहा, चौपाई, छन्द, बरवै, हरिगीतिका, कवित्त एवं सवैया आदि पर काम किया। इन्होंने न केवल कहानी और कविता के क्षेत्र में कार्य किया अपितु नाटक के क्षेत्र में भी विशेष योगदान दिया। किन्तु नाटक में पात्रों का चयन और भूमिका आदि के विषय में इन्होंने सम्पूर्ण कार्य स्वयं के जीवन के अनुभव से सम्पादित किया है।

साहित्य में योगदान

निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है कि बाबू हरिश्चन्द्र बहुमुखी प्रतिभा से सम्पन्न थे। उन्होंने समाज और साहित्य का प्रत्येक कोना झाँका है। अर्थात् साहित्य के सभी क्षेत्रों में उन्होंने कार्य किया है। किन्तु यह ख़ेद का ही विषय है कि 35 वर्ष की अल्पायु में ही वे स्वर्गवासी हो गये थे। यदि ऐसा न होता तो सम्भवत: हिन्दी साहित्य का कहीं और ज़्यादा विकास हुआ होता। यह उनके व्यक्तित्व की ही विशेषता थी कि वे कवि, लेखक, नाटककार, साहित्यकार एवं सम्पादक सब कुछ थे। हिन्दी साहित्य को पुष्ट करने में आपने जो योगदान प्रदान किया है वह सराहनीय है तथा हिन्दी जगत् आप की सेवा के लिए सदैव ऋणी रहेगा। इन्होंने अपने जीवन काल में लेखन के अलावा कोई दूसरा कार्य नहीं किया। तभी तो 35 वर्ष की अल्पायु में ही 72 ग्रन्थों की रचना करना सम्भव हो सकता था। इन्होंने छोटे एवं बड़े सभी प्रकार के ग्रन्थों का प्रणयन किया है। इस प्रकार से यह कहा जा सकता है कि हिन्दी के प्रचार एवं प्रसार में इनका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है और अपने कार्यों से इन्होंने हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में सदा के लिए स्थायी रूप से स्थान बनाया है। अपनी विशिष्ट सेवाओं के कारण ही ये आधुनिक हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल के प्रवर्तक कहे जाते हैं। पंत जी ने इनके बारे में ठीक ही कहा है-

भारतेन्दु कर गये, भारती की वीणा निर्माण किया अमर स्पर्शों में,
जिसका बहु विधि स्वर संधान।

अत: यह कहा जा सकता है कि बाबू हरिश्चन्द्र जी हिन्दी साहित्य के आकाश के एक दैदीव्यमान नक्षत्र थे। उनके द्वारा हिन्दी साहित्य में दिया गया योगदान महत्त्वपूर्ण एवं सराहनीय है।

पश्चिम रेलवे, प्रधान कार्यालय की राजभाषा संबंधी गतिविधियाँ

दिनांकः 20-08-2018 को प्रधान कार्यालय में आयोजित क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक की अध्यक्षता करते हुए महाप्रबंधक श्री ए. के. गुप्ता।

दिनांकः 20-08-2018 को प्रधान कार्यालय में आयोजित क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में सहभागिता करते हुए गृह मंत्रालय के उप निदेशक एवं अन्य अधिकारीगण।।

दिनांकः 20-8-2018 को प्रधान कार्यालय में आयोजित क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में सहभागिता करते हुए अधिकारीगण।

क्षेत्रीय स्तर पर आयोजित हिंदी प्रतियोगिता में विजेता प्रतिभागी को सम्मानित करते हुए महाप्रबंधक महोदय एवं अन्य अधिकारीगण।

दिनांकः 20-08-2018 को प्रधान कार्यालय में आयोजित क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में प्रधान कार्यालय की ई- पत्रिका का विमोचन करते हुए अध्यक्ष एवं महाप्रबंधक महोदय।

पश्चिम रेलवे, प्रधान कार्यालय की राजभाषा संबंधी गतिविधियाँ

सितम्बर माह में आयोजित राजभाषा पखवाड़ा-2018 के अंतर्गत आयोजित विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं के दृश्य।

सितम्बर माह में आयोजित राजभाषा पखवाड़ा-2018 के अंतर्गत आयोजित अंताक्षरी प्रतियोगिता की अध्यक्षता करते हुए मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री एम. के. गुप्ता।

इस अवसर पर वर्ष 2017-18 के दौरान बीस हजार शब्द योजना के तहत चयनित अधिकारियों/कर्मचारियों को नकद पुरस्कार राशि से सम्मानित करते हुए मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री एम. के. गुप्ता।

पश्चिम रेलवे, प्रधान कार्यालय की राजभाषा संबंधी गतिविधियाँ

राजभाषा पखवाड़ा-2018 के दौरान दिनांकः 14-09-2018 को प्रधान कार्यालय में लगाई गई राजभाषा प्रदर्शनी का दृश्य।

इस अवसर पर बनाई गई आकर्षक रंगोली का दृश्य।

महाप्रबंधक श्री ए.के. गुप्ता एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारी दीप प्रज्वलित कर राजभाषा प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए।

महाप्रबंधक सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारी राजभाषा प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए।

राजभाषा प्रदर्शनी के संबंध में महाप्रबंधक अपनी टिप्पणी लिखते हुए।

पश्चिम रेलवे, प्रधान कार्यालय की राजभाषा संबंधी गतिविधियाँ

दिनांकः 28-10-2018 को पश्चिम रेलवे, प्रधान कार्यालय, चर्चगेट में राजभाषा पखवाड़ा-2018 के समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन की अध्यक्षा श्रीमती अर्चना गुप्ता एवं मुख्य कार्मिक अधिकारी (नि. एवं सा.) डॉ. ए. के. सिन्हा।

इस अवसर पर पश्चिम रेलवे कला एवं सांस्कृतिक संगठन के कलाकारों एवं जयपुर से पधारे फरीद साबरी द्वारा प्रस्तुत किए गए सांस्कृतिक कार्यक्रम का दृश्य।

इस अवसर पर वर्ष-2017-18 में राजभाषा में प्रशंसनीय कार्य करने वाले अधिकारियों/ कर्मचारियों एवं राजभाषा पखवाड़ा के दौरान आयोजित विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं में सफल प्रतिभागियों को सम्मानित करते हुए।

27 वाँ आशीर्वाद राजभाषा पुरस्कार समारोह सम्पन्न

पश्चिम रेलवे की 'रेल दर्पण' को फिर मिला सर्वश्रेष्ठ गृह पत्रिका का राष्ट्रीय पुरस्कार, राजभाषा में उत्कृष्ट कार्य के लिए भी पश्चिम रेलवे को प्रथम पुरस्कार

फोटो कैप्शनः माननीय सांसद एवं संसदीय राजभाषा समिति के उपाध्यक्ष डॉ. सत्यनारायण जटिया से 'रेल दर्पण' पत्रिका के लिए घोषित सर्वश्रेष्ठ गृह पत्रिका का पुरस्कार ग्रहण करते हुए पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी एवं 'रेल दर्पण' के प्रधान सम्पादक श्री रविंद्र भाकर एवं सम्पादकीय टीम के अन्य सदस्य। दूसरे चित्र में राजभाषा में उत्कृष्ट कार्य हेतु पश्चिम रेलवे को मिला प्रथम पुरस्कार ग्रहण करते हुए पश्चिम रेलवे के उप महाप्रबंधक (राजभाषा) डॉ. सुशील कुमार शर्मा और उनकी टीम।

देश की प्रमुख साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक संस्था 'आशीर्वाद' के 27 सितम्बर, 2018 को सम्पन्न 27 वें वार्षिक पुरस्कार समारोह में पश्चिम रेलवे की लोकप्रिय गृह पत्रिका **'रेल दर्पण'** हेतु घोषित सर्वश्रेष्ठ गृह पत्रिका के प्रतिष्ठित राष्ट्रीय पुरस्कार पर कब्जा करके पश्चिम रेलवे ने एक बार फिर अपनी सृजनात्मक श्रेष्ठता साबित की है। इस समारोह में पश्चिम रेलवे को राजभाषा के प्रचार-प्रसार के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए भी प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

ये पुरस्कार 'आशीर्वाद' संस्था द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर राजभाषा के क्षेत्र में रचनात्मक उत्कृष्टता के लिए हर वर्ष प्रदान किये जाते हैं। पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री ए. के. गुप्ता ने इस उल्लेखनीय उपलब्धि पर 'रेल दर्पण' के प्रधान सम्पादक और पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी श्री रविंद्र भाकर और उनकी समूची टीम को तथा राजभाषा में उत्कृष्ट कार्य के लिए पश्चिम रेलवे के उप महाप्रबंधक (राजभाषा) डॉ. सुशील कुमार शर्मा एवं उनकी समस्त टीम को हार्दिक बधाई दी है। 'रेल दर्पण' को मिला महत्त्वपूर्ण पुरस्कार पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी एवं 'रेल दर्पण' के प्रधान सम्पादक श्री रविंद्र भाकर ने 'रेल दर्पण' पत्रिका के वरिष्ठ कार्यकारी सम्पादक श्री गजानन महतपुरकर, कार्यकारी सम्पादक श्री सी. नितिन कुमार डेविड तथा सह सम्पादक श्री अनुभव सक्सेना के साथ माननीय सांसद एवं संसदीय राजभाषा समिति के उपाध्यक्ष डॉ. सत्यनारायण जटिया के हाथों प्राप्त किया। अपनी उत्कृष्ट सम्पादन शैली, सुरुचिपूर्ण एवं पठनीय सामग्री, आकर्षक साज-सज्जा, दिग्गज कवियों और शायरों की खास काव्य रचनाओं, सुप्रसिद्ध हस्तियों के साक्षात्कार तथा श्रेष्ठ मुद्रण गुणवत्ता के लिए राष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रियता पा चुकी पश्चिम रेलवे की द्विभाषी गृह पत्रिका 'रेल दर्पण' वर्ष 2011 में भारत सरकार के गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा देश की सर्वश्रेष्ठ गृह पत्रिका के रूप में सम्मानित हो चुकी है। यह प्रतिष्ठित पुरस्कार 14 सितम्बर, 2011 को महामहिम

राष्ट्रपति महोदया के हाथों पश्चिम रेलवे के तत्कालीन महाप्रबंधक ने प्राप्त किया था। इनके अलावा 'रेल दर्पण' को पिछले 18 वर्षों के दौरान अपनी समग्र उत्कृष्टता के लिए 50 से अधिक प्रतिष्ठित पुरस्कार मिल चुके हैं।

राजभाषा में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए दिया गया प्रथम पुरस्कार पश्चिम रेलवे को केन्द्र सरकार की नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के मुंबई में स्थित 90 सदस्य कार्यालयों में राजभाषा को प्रभावी ढंग से लागू तथा बड़े केन्द्रीय कार्यालयों की कोटि में राजभाषा के क्षेत्र में सर्वाधिक उल्लेखनीय कार्य करने के लिए दिया गया है। यह प्रतिष्ठित पुरस्कार पश्चिम रेलवे के उप महाप्रबंधक (राजभाषा) डॉ. सुशील कुमार शर्मा ने डॉ. सत्यनारायण जटिया के हाथों ग्रहण किया। 'आशीर्वाद' संस्था के इस 27 वें पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन मुंबई के वर्ली स्थित नेहरू तारांगण के एनएफडीसी सभागार में किया गया, जिसमें हिन्दी में श्रेष्ठ काम करने वाले राष्ट्रीयकृत बैंकों, केन्द्रीय सरकार के विभिन्न कार्यालयों तथा भारत सरकार के विभिन्न उपक्रमों को पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. अनंत श्रीमाली ने किया तथा संस्था का परिचय निदेशक डॉ. उमाकांत बाजपेयी ने दिया।

पश्चिम रेलवे द्वारा महिला एवं बाल सशक्तिकरण तथा सुरक्षा हेतु कार्य योजना के कार्यान्वयन पर सेमिनार

माननीय रेल मंत्री श्री पीयूष गोयल द्वारा वर्ष 2018-19 को 'महिला एवं बाल सुरक्षा को समर्पित वर्ष' के रूप में घोषित किया गया है, जिसके अनुपालन में पश्चिम रेलवे रेल परिसरों में महिलाओं और बच्चों के विरुद्ध अपराधों पर नियंत्रण के साथ-साथ इन अपराधों को पूर्णतः खत्म करने के लिए अनेक उपाय कर रही है।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी श्री रविंद्र भाकर द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार इस दिशा में पश्चिम रेलवे मुख्यालय, चर्चगेट में 11 अगस्त, 2018 को 'महिला एवं बाल यात्रियों के सशक्तिकरण तथा सुरक्षा पर कार्य योजना' के कार्यान्वयन पर पश्चिम रेलवे द्वारा एक सेमिनार आयोजित किया गया। इसका आयोजन मुख्यालय की महिला सशक्तिकरण समिति द्वारा किया गया, जिसमें प्रमुख वित्त सलाहकार श्रीमती उमा रानडे, मुख्य वाणिज्य प्रबंधक (एफएम) श्रीमती इति पांडे, उप महानिरीक्षक सह मुख्य सुरक्षा आयुक्त श्री परमशिव तथा पश्चिम रेलवे के सभी छह मंडलों के मंडल रेल प्रबंधकों की अध्यक्षता वाली मंडलीय टीमें शामिल थीं। इस सेमिनार में गतिविधि कैलेंडर की प्रगति तथा प्रोग्राम पर प्राप्त फीडबैक/सुझाव शामिल थे।

श्री भाकर ने बताया कि 'संवाद' प्रोग्राम के हिस्से के रूप में लिंग संवेदीकरण पर कार्यशाला, सुरक्षा हेल्पलाइन संख्या 182 एवं चाइल्ड हेल्पलाइन संख्या 1098 के लिए जागरूकता रैली जैसी विभिन्न गतिविधियाँ आयोजित की गईं। इन सभी के अतिरिक्त जागरूकता फैलाने के लिए प्रदर्शनी एवं नुक्कड़ नाटक आयोजित किये गये तथा बालिका विद्यालय एवं महाविद्यालय, शेल्टर होम आदि में दौरे भी किये गये। पश्चिम रेलवे द्वारा आपात स्थिति में महिला एवं बाल यात्रियों की सहायता तथा उन्हें बचाने के लिए मुंबई सेंट्रल, बांद्रा टर्मिनस, सूरत, वडोदरा, अहमदाबाद, रतलाम एवं राजकोट जैसे प्रमुख स्टेशनों पर महिला एवं बाल हेल्प डेस्क स्थापित किये गये हैं। पश्चिम रेलवे ने 2017 में 562 बच्चों को बचाने में सफलता प्राप्त की तथा जुलाई, 2018 तक 265 बच्चों को बचाया जा चुका है।

महिला एवं लड़कियों की मासिक स्वास्थ्य रक्षा पर कार्य करने वाली एनजीओ - वात्सल्य फाउंडेशन के साथ इस प्रकार की संवेदीकरण कार्यक्रम पूरे पश्चिम रेलवे पर आयोजित किये गये, कार्यशाला आयोजित की गई तथा महिला यात्रियों एवं वडोदरा रेलवे स्टेशन पर अन्य रेल स्टाफ के साथ चर्चा की गई। जुनाइल जस्टिस एक्ट एंड प्रिवेंसन ऑफ चिल्डरेन फ्रॉर्म सेक्सुअल ऑफें€सेज (POCSO) एक्ट पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम वडोदरा सिटीजन काउंसिल के साथ वडोदरा स्टेशन पर आयोजित किया गया, जिसे सचिव एवं अपर मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट श्री एम. ए. मिर्ज़ा द्वारा सम्बोधित किया गया। इसी प्रकार लिंग संवेदीकरण कार्यशालाएँ पुष्पांजलि एजुकेशन एंड चैरिटेबल ट्रस्ट की सहायता से राजकोट स्टेशन पर आयोजित की गईं। नेशनल कमिशन फॉर प्रोटेक्शन ऑफ चाइल्ड राइट्स के साथ भावनगर मंडल द्वारा एक गाइड बुक मुद्रित की गई है तथा सभी स्टेशनों पर इसे उपलब्ध कराया गया है। अहमदाबाद मंडल द्वारा हमसफर ट्रेन में तथा डेमू महिला डिब्बों में सीसीटीवी कैमरे लगाये गये हैं। पश्चिम रेलवे के मुंबई मंडल ने एक आरपीएफ व्हाट्सएप ग्रुप 'सखी' तथा एक महिला सुरक्षा ऐप 'आई वॉच' बनाया है, जो महिला यात्रियों के बीच काफी लोकप्रिय है।

पश्चिम रेलवे की महिला एवं पुरुष टीमों ने जीते अखिल भारतीय रेलवे पावरलिफ्टिंग प्रतियोगिता के खिताब

पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री ए. के. गुप्ता द्वारा प्रदान की गई ट्रॉफियाँ

पश्चिम रेलवे के लिए सचमुच में गर्व का क्षण था, जब पुरुष एवं महिला वर्ग की दोनों टीमों ने भारतीय रेलवे पावरलिफ्टिंग प्रतियोगिता के खिताब जीते। 15 वीं पुरुष एवं 9 वीं महिला अखिल भारतीय रेलवे पावरलिफ्टिंग चैम्पियनशिप 2018-19 का आयोजन पश्चिम रेलवे के खेलकूद संगठन द्वारा मुंबई में 24 जुलाई, 2018 से 27 जुलाई, 2018 तक किया गया। इस चैम्पियनशिप में 15 जोनल रेलवे/पब्लिक सेक्टर से कुल 138 पुरुष एवं महिला पावरलिफ्टरों ने भाग लिया। इस चैम्पियनशिप का उद्घाटन 24 जुलाई, 2018 को पश्चिम रेलवे खेलकूद संगठन के अध्यक्ष एवं प्रमुख मुख्य वाणिज्य प्रबंधक श्री राज कुमार लाल द्वारा किया गया।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी श्री रविंद्र भाकर द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार इस चैम्पियनशिप में पुरुष वर्ग में 8 भार कोटियाँ एवं महिला वर्ग में 7 भार कोटियाँ शामिल थीं। पश्चिम रेलवे की पुरुष टीम ने 52 पॉइंट सुरक्षित करते हुए चैम्पियनशिप जीती, जबकि महिला टीम ने 57 पॉइंट सुरक्षित करते हुए चैम्पियनशिप जीती। पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन 27 जुलाई, 2018 को किया गया, जिसमें पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री ए. के. गुप्ता ने विजेता टीमों को बधाई दी तथा सभी को पुरस्कार वितरित किये। पुरस्कार वितरण समारोह में पश्चिम रेलवे खेलकूद संगठन के अध्यक्ष एवं प्रमुख मुख्य वाणिज्य प्रबंधक श्री राज कुमार लाल तथा पश्चिम रेलवे खेलकूद संगठन के महासचिव एवं मुख्य चल स्टॉक इंजीनियर (कोचिंग) श्री संदीप राजवंशी भी मौजूद थे।

पश्चिम रेलवे की पहली व्यावसायिक रोल ऑन-रोल ऑफ (रो-रो) सेवा का सूरतकल और करम्बेली के बीच सफल परिचालन

प्रदूषण रोकने तथा ईंधन खपत एवं सड़क यातायात सघनता में कमी लाने के उद्देश्य से पश्चिम रेलवे की एक पर्यावरण मित्रवत पहल

पश्चिम रेलवे ने अपनी पहली व्यावसायिक रोल ऑन-रोल ऑफ (रो-रो) सेवा का सफल परिचालन कर एक और महत्त्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है। इस सेवा के परिचालन की शुरुआत 20 सितम्बर, 2018 को कर्नाटक में स्थित कोंकण रेलवे के सूरतकल गुड्स शेड से निकले ऐसे पहले रो-रो रेक का सफ़र शुरू होने के साथ हुई, जो 21 सितम्बर, 2018 को देर शाम गुजरात में वापी के पास स्थित पश्चिम रेलवे के करम्बेली गुड्स शेड में पहुँचा। इस पहले रो-रो रेक में 25 ट्रकों का लदान किया गया, जिसके फलस्वरूप लगभग 1.81 लाख रु. हॉलेज चार्ज वसूला गया। इस रेक में लदे ट्रकों को करम्बेली गुड्स शेड में उतारा जायेगा, जहाँ से फिर नये सिरे से ट्रकों का लदान कर यह सेवा सूरतकल के लिए अपना 290 किमी लम्बा सफ़र शुरू करेगी।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी श्री रविंद्र भाकर द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार कोंकण रेलवे कॉर्पोरेशन लिमिटेड से पश्चिम रेलवे को एक प्रस्ताव प्राप्त हुआ था, जिसमें करम्बेली और रोहा के बीच रो-रो सेवाएँ शुरू करने का अनुरोध किया गया था। इस अभिनव सेवा की शुरुआत एक ऐसा अनूठा प्रयास है, जिसके फलस्वरूप सड़क और रेल के बीच माल सामग्री के निर्बाध परिवहन के साथ-साथ एक पर्यावरण मित्रवत परिवहन प्रणाली सुनिश्चित की जा सके। निकट भविष्य में जब माल यातायात का संचालन पश्चिमी डेडिकेटेड प्रे€ट कोरीडोर के ज़रिये किया जाने लगेगा, तब पश्चिम रेलवे पर और अधिक रो-रो सेवाओं का परिचालन सम्भव हो सकेगा। यह सेवा वर्तमान रेल पथ पर चलने वाली भारतीय रेल प्रणाली की अपनी तरह की पहली अल्टीमेट इंटरमोडल ट्रांसपोर्ट सेवा है। पूर्व में रो-रो सेवाओं का परिचालन बोईसर तक करने की अनुमति दी गई थी। बाद में कोलाड और करम्बेली के बीच एक ट्रायल सेवा का सफलतापूर्वक परिचालन किया गया। कोंकण रेलवे द्वारा मानक परिवहन क्षमता वाले उन्नत BOXN/BRN वैगनों का उपयोग किया जाता है, क्योंकि रो-रो सेवा के परिचालन में परम्परागत सपाट वैगनों का इस्तेमाल सम्भव नहीं है। उपयोग में लाये जा रहे वैगनों में प्रत्येक वैगन में एक ट्रक का लदान किया जा सकता है। कोंकण रेलवे की सीमा से बाहर रो-रो सेवा के व्यावसायिक स्तर पर परिचालन का यह पहला प्रयास है। प्रारम्भिक चरण में कोंकण रेलवे द्वारा इस सेवा के लिए यातायात जुटाने के प्रयास किये जायेंगे। रेलवे बोर्ड के अनुदेशों के अनुसार पश्चिम रेलवे पर रो-रो सेवा के परिवहन की रूप रेखा तैयार करने के लिए वरिष्ठ अधिकारियों की एक समिति का गठन किया गया था। भारतीय रेल प्रणाली के लिए रो-रो सेवाओं का परिचालन एक अभिनव और अनूठी संकल्पना है। सूरतकल से करम्बेली तक परिचालित इस रो-रो सेवा में मुख्य रूप से प्लास्टिक ग्रेन्युल्स, सुपारी, रबड़ लेटेक्स, काजू का तेल तथा मिश्रित स्क्रैप सामग्री का परिवहन किया गया। वापसी यात्रा में भारी माल सामग्री का परिवहन किया जायेगा।

मुंबई में बोरीवली पहला दृष्टिहीन मित्रवत स्टेशन बना

पश्चिम रेलवे, अनुप्रयास तथा कॉक्स एंड किंग फाउंडेशन के संयुक्त प्रयासों से बोरीवली को दृष्टिहीन मित्रवत स्टेशन बनाने का सपना हुआ साकार

बोरीवली स्टेशन पर दृष्टिहीन यात्रियों को होने वाली असुविधाएँ अब बीते दिनों की बात हो गई है। 28 सितम्बर, 2018 को भारत के पहले दृष्टिहीन मित्रवत स्टेशन की सफलता के पीछे मुख्य भूमिका निभाने वाली सामाजिक संस्था अनुप्रयास तथा कॉक्स एंड किंग फाउंडेशन के सहयोग से बोरीवली दृष्टिहीन मित्रवत स्टेशन बन गया, जिसका उद्घाटन दृष्टिहीन यात्री द्वारा माननीय सांसद श्री गोपाल शेट्टी, कॉक्स एंड किंग के कॉर्पोरेट कम्युनिकेशन एंड सीएसआर विभाग के उपाध्यक्ष श्री थॉमस सी. थोट्टाथिल तथा अनुप्रयास के संस्थापक एवं सीईओ श्री पंचम कजला की उपस्थिति में किया गया।

बोरीवली स्टेशन ब्रेल लिपि से चिह्नित पैदल ऊपरी पुलों की रेलिंग, आगमन एवं निकास द्वारों, सबवे की रेलिंग तथा व्यापक रूप से बनी हुई ब्रेल लिपि में लिखी बुकलेट के माध्यम से दृष्टिहीनों के लिए मित्रवत बनाया गया है।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी श्री रविंद्र भाकर द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार अंधेरी स्टेशन पर ऐसी ही सुविधाओं को उपलब्ध कराने का अनुमोदन प्राप्त हो चुका है, जिससे यह स्टेशन भी दृष्टिहीन मित्रवत हो जायेगा। बाद में अन्य स्टेशनों को भी धीरे-धीरे दृष्टिहीन मित्रवत बनाया जायेगा। पश्चिम रेलवे मुंबई के स्टेशनों और ट्रेनों को और सुगम बनाने के लिए लगातार अभिनव प्रयोगों पर कार्य करता रहा है। यह योजना भारत सरकार के सुगम्य भारत अभियान के अंतर्गत एक प्रयास है। पश्चिम रेलवे के कर्मचारियों को यात्रियों तक इन सुविधाओं को पहुँचाने के बारे में प्रशिक्षित करने के लिए वर्कशॉप आयोजित की जायेगी तथा स्टेशनों पर नियमित घोषणा की जायेंगी, जिससे इन सुविधाओं को ज्यादा से ज्यादा इस्तेमाल हो सके। यह परियोजना यात्रा को सुगम बनाने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम है, जो बहुत ही आसान, उन्नत एवं समेकित है।

दृष्टिहीन यात्रियों को होने वाली परेशानियां तथा उनकी आवश्यकताओं के बारे में मुंबई में एक सर्वे किया गया था। इन परेशानियों में एक परेशानी यह थी कि प्लेटफॉर्मों को पहचान करने में समय लगता था, जिससे उनकी ट्रेन छूट जाती थी। इस देरी के कारण यात्री चलती ट्रेन को पकड़ने की कोशिश करते थे, जिससे उनके चोटिल होने की सम्भावनाएँ बढ़ जाती थीं। दूसरी समस्या यात्रियों को स्टेशनों पर विभिन्न सुविधाओं की लोकेशनों और स्टेशन के मैप के बारे में सही-सही नहीं पता लगता था। ब्रेल लिपि में इंडिकेटर तथा लिखी गई बुकलेट से ये दोनों समस्याएँ हल हो जायेंगी। साथ ही यह दृष्टिहीन यात्रियों को सशक्त बनायेगी तथा अनजान लोगों से पूछताछ के समय में बचत करेगी। इस बुकलेट में आपातकालीन नम्बरों का विवरण भी दिया गया है। यह बुकलेट चीफ बुकिंग सुपरवाइजर के पास उपलब्ध है। श्री भाकर ने बताया कि यह योजना मुंबई रेल नेटवर्क को सभी यात्रियों विशेषकर असशक्त यात्रियों को अनुकूल बनायेगी। बोरीवली स्टेशन का चुनाव इसलिए किया गया था, क्योंकि यहाँ पर मुंबई से बाहर जाने वाले यात्री के साथ मुंबई उपनगरीय खंड के यात्री भी मिलते हैं। पश्चिम रेलवे द्वारा उपलब्ध कराई गई टेक्टाइल फ्लोरिडग ब्रेल इंडिकेटर और बुकलेट से यह स्टेशन सम्पूर्ण सुविधा युक्त बन जायेगा। पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी श्री रविंद्र भाकर द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार अंधेरी स्टेशन पर ऐसी ही सुविधाओं को उपलब्ध कराने का अनुमोदन प्राप्त हो चुका है, जिससे यह स्टेशन भी दृष्टिहीन मित्रवत हो जायेगा। बाद में अन्य स्टेशनों को भी धीरे-धीरे दृष्टिहीन मित्रवत बनाया जायेगा। पश्चिम रेलवे मुंबई के स्टेशनों और ट्रेनों को और सुगम बनाने के लिए लगातार अभिनव प्रयोगों पर कार्य करता रहा है। यह योजना भारत सरकार के सुगम्य भारत अभियान के अंतर्गत एक प्रयास है। पश्चिम रेलवे के कर्मचारियों को यात्रियों तक इन सुविधाओं को पहुँचाने के बारे में प्रशिक्षित करने के लिए वर्कशॉप आयोजित की जायेगी तथा स्टेशनों पर नियमित घोषणा की जायेंगी, जिससे इन सुविधाओं को ज्यादा से ज्यादा इस्तेमाल हो सके। यह परियोजना यात्रा को सुगम बनाने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम है, जो बहुत ही आसान, उन्नत एवं समेकित है।

मुंबई सेंट्रल मंडल की राजभाषा संबंधी गतिविधियाँ

दिनांक 21.08.2018 से 28.08.2018 तक प्रोजेक्ट सक्षम के तहत कर्मचारियों को प्रशिक्षण देती हुई वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी ।

राजभाषा पखवाडा के दौरान कर्मचारियों के लिए टिप्पण आलेखन प्रतियोगिता में भाग लेते हुए कर्मचारीगण।

राजभाषा पखवाडा के दौरान वापी स्टेशन पर राजभाषा प्रगति प्रदर्शनी।

राजभाषा पखवाडा के दौरान सूरत स्टेशन पर राजभाषा प्रगति प्रदर्शनी।

मुंबई सेंट्रल मंडल की राजभाषा संबंधी गतिविधियाँ

राजभाषा पखवाड़ा के दौरान वलसाड उप मंडल पर राजभाषा प्रगति प्रदर्शनी।

राजभाषा पखवाड़ा के दौरान मुंबई सेंट्रल स्टेशन पर राजभाषा प्रगति प्रदर्शनी।

राजभाषा पखवाड़ा के तहत आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता अधिकारी/कर्मचारियों को पुरस्कार प्रदान करते हुए मंडल रेल प्रबंधक।

ई. एम.यू. कारखाना महालक्ष्मी की राजभाषा संबंधी गतिविधियाँ

महालक्ष्मी कारखाना में मनाए गए राजभाषा सप्ताह के दौरान आयोजित प्रतियोगिता में सहभागिता करते हुए कर्मचारीगण।

महालक्ष्मी कारखाना में मनाए गए राजभाषा सप्ताह के दौरान आयोजित हिंदी प्रतियोगिता में विजेता प्रतिभागी को सम्मानित करते हुए मुख्य कारखाना प्रबंधक।

ई. एम. यू. कारखाना, महालक्ष्मी की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक के दृश्य।

लोअर परेल कारखाना की राजभाषा संबंधी गतिविधियाँ

लोअर परेल कारखाना में आयोजित राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह का शुभारंभ करते हुए मुख्य कारखाना प्रबंधक।

लोअर परेल कारखाना में राजभाषा में प्रशंसनीय कार्य करने वाले कर्मियों को सम्मानित करते हुए अधिकारीगण।

लोअर परेल कारखाना की कर्मचारी श्रीमती ज्योति पंचाल प्रधान कार्यालय में राजभाषा में प्रशंसनीय कार्य करने हेतु सम्मान ग्रहण करते हुए।

वड़ोदरा मंडल की राजभाषा संबंधी गतिविधियाँ

दिनांकः 27-09-2018 को वड़ोदरा मंडल कार्यालय में राजभाषा पखवाड़ा समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर रेलकर्मी कवि सम्मेलन का शुभारंभ करते हुए मंडल रेल प्रबंधक।

कार्यक्रम में सहभागिता करते हुए अधिकारी एवं कर्मचारीगण।

कार्यक्रम में रेलकर्मी अपनी कविता का वाचन करते हुए।

कवि का सम्मान करते हुए मंडल रेल प्रबंधक।

प्रतापनगर कारखाना की राजभाषा संबंधी गतिविधियाँ

प्रतापनगर कारखाना में मनाए गए हिंदी दिवस समारोह का दृश्य।

इस अवसर पर कर्मचारियों को पुरस्कृत करते हुए अधिकारीगण।

समारोह में सहभागिता करते हुए अधिकारी एवं कर्मचारीगण।

अहमदाबाद मंडल की राजभाषा संबंधी गतिविधियाँ

अहमदाबाद मंडल के अधीन स्टेशन पर आयोजित स्टेराकास की बैठक का दृश्य।

राजभाषा में प्रशंसनीय कार्य करने हेतु नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, अहमदाबाद द्वारा पुरस्कार ग्रहण करते हुए मंडल रेल प्रबंधक एवं राजभाषा अधिकारी।

राजभाषा पखवाड़ा के दौरान राजभाषा में उत्कृष्ठ कार्य करने वाले अधिकारियों/ कर्मचारियों को सम्मानित करते हुए मंडल रेल प्रबंधक।

साबरमती कारखाना की राजभाषा संबंधी गतिविधियाँ

हिंदी साहित्यकारों की जयंतियों का आयोजन

प्रेमचंद जयंती
02.08.18

दुष्यंत कुमार व यशपाल जैन जयंती
01.09.18

सियारामशरण गुप्त जयंती
04.09.18

डॉ. राधाकृष्णन जयंती
05.09.18

भारतेन्दु हरिश्चंद्र जयंती
09.09.18

रामधारी सिंह दिनकर जयंती
24.09.18

प्रताप नारायण मिश्र जयंती
25.09.18

हिंदी कवि सम्मेलन "जरा याद करो कुर्बानी" दिनांक: 14.08.18

प्रसिद्ध राष्ट्रीय स्तरीय कवि जगदीश तिवारी,
कवि आत्मप्रकाश व कवि सम्पत लोहार

प्रसिद्ध राष्ट्रीय स्तरीय कवि जगदीश तिवारी
कविता पाठ करते हुए

जूनियर इंजीनियर श्री मनोज यजुर्वेदी
कविता पाठ करते हुए

सम्मानित कविगण उप मुख्य राजभाषा अधिकारी
श्री शांतिलाल पुरोहित के साथ

इंजीनियरी कारखाना, साबरमती की राजभाषा संबंधी गतिविधियां

हिंदी पखवाड़े के अंतर्गत आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताएं, हिंदी दिवस तथा पुरस्कार वितरण समारोह, दिनांक : 01 से 22 सितंबर, 2018

मुकाप्र महोदय के हिंदी दिवस संदेश का विमोचन

आशुभाषण प्रतियोगिता (अराजपत्रित वर्ग)

चित्र देखो-कहानी लिखो प्रतियोगिता (अराजपत्रित वर्ग)

निबंध प्रतियोगिता (राजपत्रित वर्ग)

टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता (अराजपत्रित वर्ग)

निबंध प्रतियोगिता (अराजपत्रित वर्ग)

कंप्यूटर पर हिंदी टंकण प्रतियोगिता (अराजपत्रित वर्ग)

वाक् प्रतियोगिता (अराजपत्रित वर्ग)

हिंदी प्रदर्शनी प्रतियोगिता

पुरस्कार वितरण समारोह

इंजीनियरी कारखाना, साबरमती की राजभाषा संबंधी गतिविधियां

हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन

दिनांक: 22.08.18

दिनांक: 19.09.18

दिनांक: 20.09.18

हिंदी संगोष्ठी का आयोजन, दिनांक: 09.09.18

प्रश्न-मंचों का आयोजन

दिनांक: 14.09.18

दिनांक: 24.09.18

काराकास की तिमाही बैठक का आयोजन, दिनांक: 25.09.18

राजकोट मंडल की राजभाषा संबंधी गतिविधियाँ

स्टेराकास-राजकोट में दिनांक 10.08.2018 को हिंदी वाक् प्रतियोगिता में प्रतिभागी कर्मचारीगण।

स्टेराकास-हापा में दिनांक 18.09.2018 को आयोजित हिंदी कार्यशाला में व्याख्यान देते हुए राजभाषा अधिकारी।

दिनांक 14.09.2018 को राजभाषा प्रर्दशनी का अवलोकन करते हुए मंरेप्र, अमंरेप्र, राधि एवं अन्य अधिकारीगण।

"सौराष्ट्र गौरव" पत्रिका अंक-4 का विमोचन करते हुए मंरेप,अमंरेप्र एवं राधि।

दिनांक 10.08.2018 को आयोजित मंराकास की बैठक में समीक्षा करते हुए मंरेप्र।

दिनांक 12.09.2018 को प्रश्न-मंच प्रतियोगिता में प्रतिभागी कर्मचारीगण।

भावनगर मंडल की राजभाषा संबंधी गतिविधियाँ

दिनांकः 05-09-2018 को राजभाषा पखवाड़ा के दौरान भावनगर मंडल कार्यालय में आयोजित हिंदी प्रतियोगिता का दृश्य।

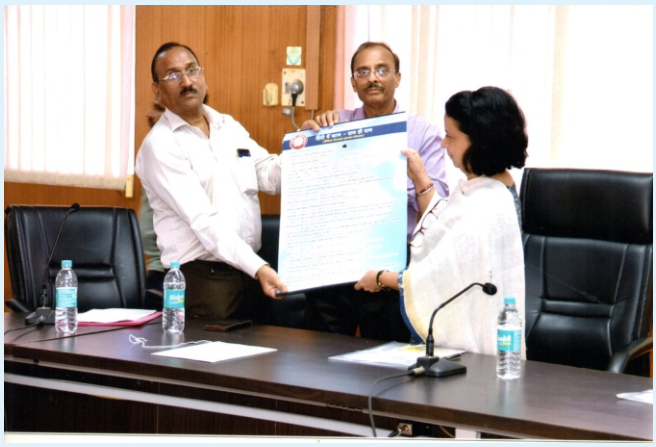

राजभाषा पखवाड़ा के दौरान जारी विभिन्न हिंदी पोस्टर एवं पंपलेट।

राजभाषा पखवाड़ा के अवसर पर मंडल कार्यालय में लगाई गई राजभाषा प्रदर्शनी का दृश्य।

दिनांकः 06-09-2018 को राजभाषा पखवाड़ा के दौरान मंडल कार्यालय में लगाई गई राजभाषा प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए मंरेप्र एवं अन्य अधिकारीगण।

राजभाषा पखवाड़ा के समापन के अवसर पर पुरस्कार वितरण समारोह की झलकियां।

भावनगर कारखाना की राजभाषा संबंधी गतिविधियाँ

दो दिवसीय हिन्दी कार्यशाला में स्वास्थ्य संबन्धित व्याख्यान देते हुए डॉक्टर पी.पी.वाघ.

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक में भाग लेते हुए श्री अशोक कुमार लोंढे वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी चर्चगेट.

राजभाषा सप्ताह वर्ष 2018 के दौरान अधिकारियों को पुरस्कृत करते हुए मुकाप्र आर.बी. विजयवर्गीय.

राजभाषा सप्ताह वर्ष 2018 के दौरान विजेता कर्मचारियों को पुरस्कार प्रदान करते हुए मुकाप्र श्री आर.बी. विजयवर्गीय.

रतलाम मंडल की राजभाषा संबंधी गतिविधियाँ

दिनांकः 17-05-2018 को रतलाम मंडल कार्यालय में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की अध्यक्षता करते हुए मंडल रेल प्रबंधक।

बैठक के दौरान हिंदी के सुप्रसिद्ध कवियों की कविता पर आधारित तैयार किए गए पोस्टर को प्रदर्शित करते हुए अधिकारीगण।

बैठक के दौरान राजभाषा पंपलेट को प्रदर्शित करते हुए अधिकारीगण।

दिनांकः 12-06-2018 को मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की अध्यक्षता करते हुए मंडल रेल प्रबंधक।

बैठक में सहभागिता करते हुए प्रधान से उप महाप्रबंधक (राजभाषा) एवं अन्य अधिकारीगण।

दाहोद कारखाना की राजभाषा संबंधी गतिविधियाँ

दिनांक 19.09.2018 को कारखाना राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक की अध्यक्षता करते हुए मुख्य कारखाना प्रबंधक।

दिनांक 14.09.2018 को दाहोद कारखाना में लगाई गई राजभाषा प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए मुख्य कारखाना प्रबंधक।

राजभाषा प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए मुख्य कारखाना प्रबंधक एवं अन्य अधिकारीगण।

राजभाषा प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए कारखाना के अधिकारी एवं कर्मचारीगण।